

13, 12. स उत्क्रामन्प्रियमाणाः ÇAT. Br. 14, 7, 4, 8. 2, 3. 8, 3, 2. 10, 1. — 2) *übergelien, bei Seite lassen* (vgl. u. अति): तमुत्क्रातमात्मजस्य वधं रणे । अचक्ष्व MBh. 14, 1812. पूर्वानुपायानुक्रम्य चतुर्थं इह दृश्यते R. 5, 37, 29. *unbeachtet lassen, vernachlässigen, übertréten*: श्रापे प्रमाणमुत्क्रम्य धर्मं न प्रतिपालयन् MBh. 3, 1180. धर्ममुत्क्रम्य 1368. — caus. उत्क्रमयति *hinaufgehen* —, *hinausschreiten lassen* TS. 5, 1, 2, 1. ÇAT. Br. 6, 3, 2, 6. 2, 13. KĀTJ. Çr. 16, 2, 10. अश्वमुत्क्रमयत्य LĀTJ. 9, 9, 23. उत्क्रामयति KAUG. 76. — desid. प्राण उदचिक्रमिष्य *wollte hinausgehen* ÇAT. Br. 7, 5, 2, 16. 2, 4, 5. 8, 5, 2, 1. उच्चिक्रमिष्यन् KĀND. Up. 5, 1, 12. — Vgl. उत्क्रम Jgg.

— अत्युद् *sich hervorthun*: अत्युत्क्राताश्च धर्मेषु पाषण्डसमयेषु च । कृशप्राणाः कृशधनास्तेभ्यो दत्तं महाफलम् ॥ MBh. 13, 1628. *übertragen, mehr gelten als*; mit dem acc.: भर्तुर्निःश्रेयसे युक्तास्त्युत्क्रातमानो रणे कृताः । ब्रह्मलोकगता युक्ता नात्युत्क्रामन्ति (im vorübergehenden Verse in derselben Bed. अतिक्रामन्ति) भूमिदम् ॥ 3160.

— अत्युद् act. *nach Jmd hinauf- oder hinausgehen* ÇAT. Br. 1, 7, 2, 3. प्राणमनूत्क्रामन् सर्वं प्राणा अत्युत्क्रामन्ति 14, 7, 2, 3.

— अत्युद् caus. *hinauf- oder hinausschreiten lassen, ersteigen lassen*: अथैनामपराजितायां दिशि सप्त पदान्यभ्युत्क्रामयति ĀCV. GRHJ. 1, 7. किमिमभ्युत्क्रामिष्याम (sic) इति — तं महत्सौभगमभ्युद्क्रमयन् ÇAT. Br. 6, 3, 2, 13.

— उपोद् act. *zu Etwas hinaufsteigen*: दिवम् ÇAT. Br. 1, 7, 2, 1. 3, 1, 2, 1. 4, 2, 2, 5.

— व्युद् act. 1) *auseinandergehen*: इन्द्रियाणि वीर्याणि व्युद्क्रामन् ÇAT. Br. 12, 7, 4, 9. 8, 2, 1. व्युत्क्रामतेत्याह 3, 9, 2, 13. 7, 4, 2, 3. 8, 2, 2, 11. AIT. Br. 1, 24. द्वन्द्वं व्युत्क्राताः = द्विवर्गसंबन्धेन पृथग्व्यवस्थाः P. 8, 1, 15, Sch. *fortgehen, weichen*: पूता व्युत्क्रातृजसो ऽमलाः MBh. 14, 1319. — 2) *überschreiten, übertréten, übergelien, nicht beachten*: व्युत्क्रातवर्त्मनो भानोः BHATT. 22, 3. व्युत्क्रातधर्म MBh. 13, 4768. व्युत्क्रम्य लक्ष्मणमौ भर्ता वन्दे RAGH. 13, 72.

— समुद् *übertréten, nicht beachten*: धर्मम् (so verbinden wir) MBh. 1, 4835.

— उप 1) *herantreten, herbeikommen, kommen zu*: उपं क्रमस्व पुरुषमा भर् वाजम् RV. 8, 1, 4. 70, 7. उपं त्वा कर्मव्रतये स नो युवोयशक्राम यो धृषत् 21, 2. उपक्रम्य MBh. 3, 17323. उपक्रान्ति 1, 6445. पुनरेव महातपाः । मागधेषूपचक्राम 2, 741. राजस्तस्याज्ञया देवी वसिष्ठमुपचक्रमे 1, 6787. तयोः — समीपमुपचक्रमे 6711. यदि ह्यकृतार्थो ऽसौ मत्सकाशमुपक्रमेत् R. 5, 65, 4. उपतटमुपक्रम्य MEGH. 38, v. 1. *feindlich auf Jmd losgehen*: उपक्रामति ज्ञतृश्च उदेगजननः सदा MBh. 13, 6716. — 2) *durchschreiten*: योजनानामकं षष्ठिमुपक्रमितुमुत्सहे R. 5, 1, 46. — 3) *sich auf eine bestimmte Art Jmd nähern, Jmd angehen, behandeln, verfahren gegen*: नयेन विधिदृष्टेन यदुपक्रमते परान् MBh. 2, 678. उपचक्राम तौ वाग्भिर्महीभिः R. 4, 2, 2. सर्वोपायैरुपक्रम्य सीतां 5, 25, 56. उपायोपक्रान्तः DAÇAK. 86, 18. सर्वयोपक्रान्तः 89, 10. *verfahren, zu Werke gehen*: कथं तदनुज्ञाय — उपक्रमेत् BāG. P. 6, 3, 20. *in ärztliche Behandlung nehmen*: असाध्यान्नोपक्रमेत् Suçr. 1, 31, 1. मुनिर्षाग्निरुपक्रान्ताः 16. आतुरमुपक्रममाणेन मिषजा 124, 8. मुद्रातत्त्वमन्त्रध्यानादिभिश्चोपक्रम्य DAÇAK. 73, 4. उपक्रान्तव्रणा 97, 1. — 4) *an Etwas gehen, sich an Etwas machen, begehen, verrichten*: गन्धर्वानर्जुनस्तदा । लक्षयिष्यथ दिव्यानि महास्त्रा-

न्युपचक्रमे ॥ MBh. 3, 14984. उपक्रान्ति (Sch. = समाप्ति) प्रमुञ्चति KĀTJ. Çr. 8, 4, 20. द्विगुणं त्रिगुणं वापि प्राणायाममुपक्रमेत् JĀG. 3, 200. धर्मे यतः स्यात्तदुपक्रमेत् R. 2, 21, 57. *an Etwas gehen, den Anfang womit machen, beginnen, anheben, sich anschicken*: निपणामुपक्रान्तमिदानीम् MĀLAV. 10, 8. mit dem acc.: तेनोत्तरं पत्नमुपक्रमेत् LĀTJ. 10, 18, 8. ईजितुं राजसूयेन साधनान्युपचक्रमे MBh. 2, 1230. युद्धमुपक्रान्तम् 3, 14966. इत्यादिकं जगतः प्रागवस्थामुपक्रम्य सर्गप्रतिपादकं वाक्यज्ञातं पुराणम् SĀ. bei BURN. BāG. P. 1, 1, p. x. mit dem dat.: धातुः — विवाहयोपचक्रमे MBh. 1, 4131. अस्त्राणि तानि दिव्यानि दर्शनायोपचक्रमे 3, 12297. गमनाय 1, 5895. R. 1, 29, 26. गमनायोपचक्राम 37, 26. शपथयोपचक्रमुः MBh. 13, 4513. mit dem infin.: LĀTJ. 10, 19, 4. उपाक्रमत काकुत्स्थः कृपणं बहु भाषितुम् R. 2, 103, 6. तामापश्रुमुपचक्रमे MBh. 3, 1734. ग्रहीतुं खगमांस्त्वर्मायोपचक्रमे 2095. R. 1, 9, 1. 2, 30, 46. 3, 12, 17. PĀNĀT. 263, 5. RAGH. 17, 13. ÇIC. 9, 43. भूय एव महोक्तं विचेतुमुपचक्रमुः MBh. 3, 8870. ता इमा जमितुं पापा उपक्रामन्ति मा प्रभो BāG. P. 3, 20, 26. *seinen Anfang nehmen* LĀTJ. 9, 9, 6. Nach P. 1, 3, 42 und Vop. 23, 33 soll उपक्रम् in der Bed. von *anfangen* immer im med. erscheinen. तटमुपाक्रमेत् BHATT. 8, 25 wird von den Scholiasten durch गतुं प्रारब्धवान् *er brach auf* erklärt. Nach P. 1, 3, 39 und Vop. 23, 30 hat das med. von उपक्रम् wie अतिक्रम् auch die Bedd. von वृत्ति. सर्ग (उत्साह) und तपन. Die Scholiasten zu BHATT. 8, 23 erklären das verb. fin. in परितुमुपाक्रमेत् राजसी तस्य विक्रमम् durch उत्सहे, उत्सकृते स्म. — Vgl. उपक्रान्त् Jgg.

— समुप 1) *herantreten*: समुपक्रान्त R. 2, 78, 14. — 2) *anheben, beginnen, sich anschicken*; mit dem inf. und med.: वक्तुं समुपचक्रमे MBh. 13, 4222. यष्टुम् R. 1, 39, 25. — 42, 10. 60, 22. 61, 5. 62, 15. 63, 4. 2, 72, 4. 3, 3, 1. 4, 3, 17. Ueberall am Ende eines Cloka. act.: भूयः समुपचक्राम वचनं वक्तुमुत्तमम् R. 5, 37, 1.

— नि act. 1) *auftreten, hineintreten*: त्रिंशत्पदा न्यक्रमीत् RV. 6, 59, 6. सा गार्हपत्ये न्यक्रमीत् AV. 8, 10, 2. Jgg. कार्ष्णैस्त्वासी न्यक्रमीत् RV. 9, 36, 1. सा यत्र यत्र न्यक्रमन्तौ धृतमपोडयत् TS. 2, 6, 2, 1. — 2) *niedertreten*, mit dem acc.: महासै चिद्वर्द्धं नि क्रमोः पदा RV. 1, 51, 6.

— अनुनि act. *in den Fußstapfen folgen, nachtreten*: स यो नो वाचं व्याहृतां मिथुनेन नानुनिक्रामात् ÇAT. Br. 1, 5, 4, 6. सप्त पदान्यनुनिक्रामति 3, 3, 4, 1. 2. TS. 6, 1, 8, 1.

— अभिनि *niedertreten*, mit dem acc.: पणो न्यक्रमीर्भि RV. 10, 60, 6.

— निस् *hinausschreiten, —gehen, hervorkommen, von Hause gehen*: स चक्रमे निरुत्क्रमः सदैवः RV. 5, 87, 4. निरेवान्यतरः क्रामति प्रान्यतरः पथ्यते ÇAT. Br. 4, 3, 4, 9. 2, 4, 22. 5, 1, 5, 28. 11, 2, 3, 32. 14, 7, 2, 3. KĀTJ. Çr. 5, 9, 21. 8, 7, 19. निरक्रामत्पुरात् MBh. 1, 4445. 2, 1016. PĀNĀT. 48, 1. रङ्गात् MBh. 1, 7060. आग्रमात् SĀV. 4, 26. R. 1, 9, 20. गृहात् PĀNĀT. 40, 19. कोटरात् 98, 2. उजात् BRAHMA-P. in LA. 56, 17. रसातलात् BHATT. 7, 71. मुखनिक्रान्ता विप्रुषः H. 839. mit dem gen.: पुरस्योपनिहृदस्य — निष्क्रम्य R. 6, 31, 6. (प्राणाः) निक्रामन्ति (lies: निष्क्रामन्ति; in dieser Verbindung sonst उत्क्रमम्) ÇĀNTIC. 1, 18. निकृतेषु ततस्तेषु निष्क्रामन्नपुञ्जाः MBh. 5, 267. निष्क्रान्ति मयि — तथा संनिहिते MBh. 13, 129. 5874. — 3, 14287. 5, 267. N. 9, 6. SĀV. 5, 68. R. 2, 44, 16. Suçr. 1, 347, 5. PĀNĀT. 48, 6. 107. 11. 170, 24. तस्मिंस्तु निष्क्रमति R. 2, 20, 1. 41, 1. निष्क्रम 3, 16, 29. निष्क्रामितुम् MBh. 3, 8623 (an der entsprechenden Stelle R. 3, 16, 31 richtig: